शिक्षापत्री सारांश

शिक्षापत्री सारांश

श्री स्वामिनारायण मंदिर
श्रीजी बापा
वासणा, अमदावाद-७.
SMVS

■ *प्रेरणामूर्ति* ■

प.पू.अ.मु. सद्. श्री देवनंदनदासजी स्वामीश्री
(प.पू. बापजी)

■ *प्रकाशक* ■

"सत्संग साहित्य डिपार्टमेन्ट"
स्वामिनारायण धाम - गांधीनगर.
फोन : २३२१३०५२/५३

■ *प्रस्तुत कर्ता*

श्री स्वामिनारायण मंदिर वासणा संस्था **(SMVS)**

■ *प्रेरणामूर्ति*

प.पू.अ.मु. सद्. श्री देवनंदनदासजी स्वामीश्री (प.पू. बापजी)

■ *लेखनकार्य*

साहित्य लेखन कार्यालय

■ *संस्करण*

प्रथम : फरवरी - २००९ • १००० प्रत

द्वितिय : फरवरी - २०११ • २००० प्रत

© सभी हक्क प्रकाशक के स्वाधीन

■ *सौजन्य*

मुनि क्रन्स्ट्रकशन - अहमडाबाद

■ *प्राप्ति स्थान* संस्था के सभी केन्द्र

■ *मूल्य* रू. ४.००

सेवा मूल्य रू. २.००

नित्य पूजा

"सभी प्रातःकाल स्नान करके भगवान की पूजा करें और बाद में ही दूसरा कार्य (धंधा) करें।"

– श्रीजीमहाराज (ग.प्र. ४८ वच.)

प्रातःकाल जल्दी उठकर, स्नानादिक क्रिया करके स्वामिनारायण भगवान की आज्ञा अनुसार एक शुद्ध वस्त्र पहनें और एक ओढें, और पूर्व की तरफ मुख करके या उत्तर की तरफ मुख करके पूजा करने बैठे। बैठने के लिये एक आसन रखें। उसके बाद श्रीजीमहाराज के लिये कम से कम दो आसन (रेशमी कपडे)

बिछायें और उसके उपर पूजा की मूर्तियाँ इकट्ठी रखें।

उसके बाद भाल के मध्य में स्वामिनारायण भगवान के प्रतीक समान तिलक करें और तिलक के मध्य में मुक्त के प्रतीक समान कुमकुम का चांदला (टीका) करें। इसी प्रकार चंदन का तिलक और चांदला दोनों हाथ पर और सीने के मध्य भाग में भी करें। जबकि स्त्री वर्ग को सिर्फ एक कुमकुम की बिंदी ही केवल भाल में ही करना चाहिये पर तिलक न करें।

इसके बाद नेत्र बंद करके प्रथम मानसी पूजा करें। जिसमें साक्षातभाव से मनन करें। अब शयन किये हुए महाराज को जगायें। तत् पश्चात् स्नानविधि करायें। महाराज को ऋतु अनुसार ठंडे-गरम जल से स्नान करायें। इसके बाद सुंदर कीमती वस्त्र-अलंकार धारण कराके सिंहासन पर बिराजमान कर आरती करें। केसर, इलायचीयुक्त दूध, मेवा, अल्पाहार, वगैरह भोग धराएँ। इसके बाद महाराज की चंदन-पुष्प के अर्चन से पूजा करें। इस तरह मानसी पूजा करें। अब स्वामिनारायण भगवान, सहजानंद

स्वामी, जीवनप्राण बापाश्री और अन्य सद्गुरुओं की मूर्तियों को साक्षात्भाव से पूजा में स्थापित करें और महाराज का आह्वान मंत्र बोलकर बिराजमान करें। इसके बाद मूर्ति के सामने एकाग्र चित्त होकर, मूर्ति को निहारते हुए स्वामिनारायण... स्वामिनारायण... मंत्र का रटण (जाप) करते हुए पाँच माला करें। इस बीच कुछ भी बोलना या इशारा करना या हाथ से इशारा करना वर्जित है।

इसके बाद एक पैर पर खडे होकर गुरुमंत्र की एक माला करें। अपना गुरुमंत्र है, "अहम् अनादिमुक्त स्वामिनारायण दासोस्मि।" इसके बाद एक माला प्रदक्षिणा (परिक्रमा जो भगवान को आसन पर बिराजमान किया है उनकी) करते हुए करें। तत्पश्चात् कम से कम छः दंडवत प्रणाम करें और स्वामिनारायण भगवान से प्रार्थना करें कि "हे महाराज! कुसंग से मेरी रक्षा करना और मुझसे मन-कर्म या वचन से जाने-अनजाने में भी आपका अपराध हो गया हो तो क्षमा करना, और इसके

प्रायश्चित्त के रूप में एक दंडवत् प्रणाम अधिक किया है।" इसके पश्चात् थाल (भोग) लगाने का कीर्तन बोलकर श्रीजीमहाराज को प्रसाद का भोग लगाये, और बाद में विसर्जन मंत्र बोलकर मूर्तियों को चरणस्पर्श करके एकत्र करें और शिक्षापत्री सारांश की पाँच आज्ञाओं का पठन कर पूजा समाप्त करें।

इस प्रकार पूजा समाप्ति के बाद ही दूसरी सर्व क्रिया करें।

आह्वान मंत्र

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ हे नाथ ! स्वामिनारायण प्रभो
धर्मसुनो दयासिंधो, श्वेषां श्रेयः परम् कुरु ।
आगच्छ भगवन् देव, स्वस्थानात् परमेश्वर
अहम् पूजा करिष्यामि, सदा त्वम् सन्मुखोभव ॥

विसर्जन मंत्र

स्वस्थानम् गच्छ देवेष, पूजा मादाय मामकिम ।
इष्टकाम प्रसिद्धि अर्थम्, पुनरागमनाय च ॥

प्रस्तावना.....

अपने इष्टदेव सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान ने अपने सब आश्रितों (भक्तों) के लिये वडताल गाँव में स्वहस्ताक्षर से संवत १८८२ के माघ शुक्ल ५ (पंचमी) के दिन इस शिक्षापत्री को लिखा है, जो सभी के जीव का हित करने वाली है। प्रेम से इस शिक्षापत्री के अनुसार ही निरन्तर सावधानी पूर्वक सभी को आचरण करना चाहिये, लेकिन इस शिक्षापत्री का उल्लंघन करके आचरण नहीं करना चाहिये।

श्रीजीमहाराज ने स्वमुख से कहा है कि, ''ये जो वाणी है वो हमारा स्वरूप है और इसे परम आदर सहित माने।

हमारे आश्रित सभी पुरुष और स्त्री जो भी इस शिक्षापत्री के

अनुसार आचरण करेंगे, तो वे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष वे चारों पुरुषार्थ की सिद्धि को निश्चय ही प्राप्त करेंगे और जो भी स्त्री या पुरुष इस शिक्षापत्री के अनुसार आचरण नहीं करेंगे, तो वे हमारे सम्प्रदाय से बाहर है ऐसा समझें (माने)।''

श्रीजीमहाराज ने ऐसे बलपूर्वक शब्दों से स्वयम् यह आज्ञापत्री रूप शिक्षापत्री दी है। उसके साररूप ये आज्ञाएँ सब प्रतिदिन पूजा के समय पढे और उसके अनुसार निरन्तर प्रयत्नपूर्वक आचरण करने का आग्रह रखें तो अपने इष्टदेव सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान अवश्य राजी (प्रसन्न) होंगे।

इसके अलावा सिर्फ जीवात्मा के आत्यंतिक कल्याणार्थ ही और सिर्फ श्रीजीमहाराज को प्रसन्न करने के लिये ही ये सत्संग स्वीकारा है, तो स्वामिनारायण भगवान के अति प्रसन्नता के साधनरूप, उनके स्वरूप की सर्वोपरी शुद्ध उपासना समझना और दृढ करना आवश्यक (जरूरी) है, एक (one) की जगह पर है और अति प्रसन्नतार्थ तथा दिव्यजीवन जीने के लिये ये आज्ञाएँ समझना और उसका पालन करना ये भी इतना ही जरूरी है।

श्रीजीमहाराज ने इसके लिये 'सत्संगी जीवन' आदि ग्रंथों में गृहस्थ तथा त्यागी को पंचवर्तमान रूप आज्ञाएँ दी है। उसका स्वामिनारायण भगवान के तमाम छोटे-बडे, गृही या त्यागी आश्रित भक्तगण बडी सावधानी से पालन करें। ये आज्ञाएँ त्रिकालाबाधित है, यानी तीनों काल में तथा किसी भी देश में या स्थान में हरिभक्तों के लिये इसका पालन करना अति आवश्यक है। इसलिये उन आज्ञाओं को जानकर, सोचकर, उसके अनुसार दिव्य जीवन बने इसलिये यहाँ सर्व प्रथम स्वामिनारायण भगवान के दिये हुए पंचवर्तमान, जिसमें शिक्षापत्री की बहुत सी आज्ञाओं का समावेश हो जाता है, तदुपरांत शिक्षापत्री की आज्ञाएँ यहाँ सार के रूप में दी है। प्रत्येक सत्संगी को उसका प्रतिदिन पठन करना चाहिए और मनन-चिंतन करके, स्वअध्ययन करके, अपनी कमियों को दूर करके, प्रयत्नपूर्वक उसके अनुसार आचरण करने का प्रयत्न करें।

सत्संग साहित्य डिपार्टमेन्ट के

प्रेमभरे जय स्वामिनारायण...

जीवन मंत्र

स्वामिनारायण भगवान मेरे इष्टदेव है।

यह सत्संग मेरा घर है।

महाराज की मूर्ति मेरा ध्येय है।

सदेह मैं मूर्तिधाम में ही हूँ।

महाराज के लिये ही मेरा जन्म है।

उनके हो के ही सदा जीना है।

भगवान और संत की सेवा ये ही मेरा सुख है।

उनकी आज्ञा और अनुवृत्ति में ही सदा रहूँगा।

सत्संगी मात्र के सुख-दुःख में हमेशा सहभागी रहूँगा।

-जय श्री स्वामिनारायण

शिक्षापत्री सारांश

गृहस्थों के पंचवर्तमान (नियम)

(सत्संगीजीवन, शिक्षापत्री और गढडा प्रथम के ७८ वे वचनामृत की रहस्यार्थ टीका के आधार पर)

(१) दारू वर्तमान :

''जो देखने से, खाने से, पीने से, सुनने से या अनुभव करने से इन्द्रियाँ-अंतःकरण को नशा चढे, वो तमाम वस्तु, पदार्थ या क्रिया दारू तुल्य माने जाते हैं।'' जैसे कि -

चाय, कोफी, बीडी, सीगरेट, गांजा, अफीम, तंबाकु, गुटखा, मावा-मसाला, पान आदि पदार्थ तथा किसी भी प्रकार का बीयर या अन्य कोई भी प्रकार का दारू भी वर्ज्य है। ये पदार्थों का उपयोग करना तो नहीं, पर करवाना भी नहीं।

- आल्कोहोलिक दवाइयाँ भी दारू तुल्य मानी जाती हैं।
- टी.वी., सिनेमा, सिरियलें, नाटक, सट्टा, जुआँ, चोपाट, लोटरी, सरकस वगैरह मन को नशा करनेवाले हैं, इसलिये वो भी दारू तुल्य माना जाता है।

(२) माटी वर्तमान :

'माटी' का मतलब मांसाहार।

जिसमें सूक्ष्म जीव जन्तुओं का संसर्ग हो तथा जो शास्त्र निषेध हो वह तमाम पदार्थ माटी तुल्य गिने जाय।

- जिसमें प्रत्यक्ष मांस, अंडा तथा मांस और अंडा मिश्रित चीजें या दवाइयों (औषधियों) का उपयोग भी मांसाहार तुल्य हैं।
- बिना छना हुआ पानी, दूध, तेल, घी वगैरह भी मांस तुल्य हैं।

- बिना छना और बिना साफ किया अनाज, आटा, सूक्ष्म कीडें युक्त शाकभाजी... जैसे – फुलगौभी, कुछ भाजीं वगैरह मांस तुल्य हैं।
- तमोगुण प्रधान और अति गंधयुक्त वस्तुएँ जैसे – कांदा (प्याज), लहसून, हिंग आदि....

मतलब घर में तो ये त्याग करने योग्य पदार्थों का त्याग करना ही, लेकिन बाजार की तमाम चीज–वस्तुओं तथा शादी–ब्याह जैसे प्रसंगों में या अशुभ प्रसंगों में भी खाना–पीना नहीं चाहिये क्योंकि, वहा नियम–धर्म का पूर्णरीति से पालन नहीं हो सकता है और इस वर्तमान का भंग होता है। इसलिये **स्वामिनारायण** भगवान को प्रसन्न (राजी) करने के लिये भगवान के भक्त को बाजारू खान–पान का त्याग अवश्य करना चाहिए। जरूरत के हिसाब से घर में ही छानकर, साफ करके, ऊपर के नियमों का पालन करके वस्तु (चीज) बनायें, भगवान को भोग लगायें और प्रसादी की करके उसका उपयोग करें।

(३) चोरी वर्तमान :

चोरी अर्थात् सिर्फ किसी की चीज की चोरी करना वह चोरी कहलाय। बहोत सारे तरीकों से चोरी वर्तमान का उल्लंघन होता है । अगर यह चोरी वर्तमान का अक्षरशः पालन करना हो तो नीचे दी गई क्रियाओ का परित्याग करना होगा।

जैसे की :

- किसी की वस्तु जबरदस्ती या धोखे से नहीं लेना चाहिए।
- रास्ते में पडी हुई चीज भी न लें।
- किसी की अमानत पर अपना हक न करें।
- बिना हक की वस्तु या रकम कोई दे तो भी न लें।
- लांच-रिश्वत लेना, मिलावट करना, कम देना, धोखा करना, कपट करना, इन सब का त्याग करें।
- किसी की बंधियार जगह पर बिना पूछें न ठहरें।

- नौकरी करते हो तो कभी भी कामचोरी या समय की चोरी न करें ।
- सरकारी वस्तु या लाइट, पानी, टेलिफोन वगैरह सेवाओं की चोरी न करें ।
- गैरकानूनी धंधा, व्यवसाय या नौकरी न करें ।
- **देव के प्रति चोरी :** कानूनी धंधा, व्यवसाय, नौकरी या खेती की उपज में से द्रव्य की शुद्धि वास्ते कम से कम **१० प्रतिशत** या व्यवहार से अति दुर्बल हो तो **५ प्रतिशत धर्मादा निकालें** । यह धर्मादा अगर न निकाले तो वह देव की चोरी कहलायें ।

भगवान ने आपको दिया हुआ समय का यानी कि उम्र का भी दशांश भाग धर्मादा निकालें अर्थात् इतना समय भगवान की और संतों की सेवा तथा समागम वास्ते अवश्य निकलें । वरना चोरी वर्तमान का भंग (खंडन) होता है ।

(४) अवेरी वर्तमान :

अवेरी वर्तमान से मतलब ब्रह्मचर्य । गृहस्थ भले ही संसार में हो तो भी उनको **स्वामिनारायण** महाप्रभु को प्रसन्न (राजी) करने के लिये इस वर्तमान का इस प्रकार पालन करना ही चाहिये ।

- पुरुष पर–स्त्री के सामने या स्त्री पर–पुरुष के सामने कुदृष्टि न करें या कुविचार न करें ।
- पुरुष पर–स्त्री का या स्त्री पर–पुरुष का संग न करें ।

पुरुष अपनी युवा माँ, बहन या बेटी के सामने दृष्टि करके ने देखें या उनके साथ एकांत स्थान में न रहें ।

इसी तरह, स्त्री अपने युवा पिता, भाई या बेटे के सामने दृष्टि करके न देखें या उनके साथ एकांत स्थान में न रहें ।

तो स्वाभाविक है कि दूर के सगे-संबंधी, विजातीय मित्र या पुरुष को अन्य स्त्री के सामने और स्त्री को अन्य पुरुष के सामने दृष्टि करके देखने की या एकांत स्थान में रहने की मना ही होगी...होगी...होगी.. ही।

- नाटक, सिनेमा, टी.वी., चेनलें, सिरियलें, ईन्टरनेट तथा आज के आधुनिक उपकरणों द्वारा प्रदर्शित नग्न, अर्धनग्न, चित्र-विचित्र परिधान युक्त देखा करना, दृश्यों या चित्रों को देखना वे भी उतना ही हानिकारक है। जिसका सत्संगी मात्र को निषेध है। उसका प्रयत्न पूर्वक त्याग करें।
- विकृति पैदा करनेवाला तथा खुद के अंग दिखें ऐसे बारीक तथा छोटे वस्त्र न पहने और ऐसे वस्त्र पहने हुए दृश्यों को न देखें।
- गरबा-नृत्य, पार्टियाँ, डिस्को जैसे कामुक तथा वृत्तियों को बहकानेवाले प्रसंगों में (प्रोग्रामों में) हिस्सा न लें और जायें भी नहीं।

- बीभत्स साहित्य, लेख, पुस्तकें, मेगेजीन वगैरह न देखें, न पढें और ऐसे चित्र और दृश्यों को भी न देखें ।
- स्त्रियों को चाहिये कि वो अपने रजस्वला धर्म का सावधानी से (गंभीरता पूर्वक) पालन करें । तीन दिन दूर रहे, चौथे दिन स्नान करके सबको छुए ।
- खुद की स्त्री का भी (पत्नी) ऋतुकाल में आसक्ति रहित संग करें । उसमें भी एकादशी, एकादशी के आगे का और पीछे का दिन, व भगवान के प्रागट्य दिन तथा उसके आगे का और पीछे का दिन, अमावस्या, श्रावण मास, अधिक मास, व्रत-यज्ञादिक उत्सवों के दिन तथा तीर्थस्थान वगैरह में खुद की स्त्री का भी त्याग रखें ।

(५) आचारभ्रष्ट न होना और दूसरें को आचारभ्रष्ट नहीं करना :

जिस के घर का खाना निषेध हो उसके घर का खाना नहीं। अगर हमारे खुद के घर का खाना (खाना-पीना) जिसके लिए निषेध हो उसको खिलाना नहीं अर्थात् धर्म-नियम युक्त न हो उसके घर का खाना-पीना नहीं करना और हमारा खानपान ऐसा न हो तो धर्म-नियम के पालन करने वाले को आग्रह करके खिलाना नहीं।

सत्संगी मात्र को अवश्य पालने के नियम

इस पंचवर्तमान के अतिरिक्त **स्वामिनारायण भगवान** ने शिक्षापत्री में निर्देश किये हुए सार-रूप आज्ञाओं का भी भगवान के शरणागत भक्तगण अवश्य पालन करें।

(१) किसी भी जीव-प्राणीमात्र की हिंसा न करें। और जानकर के तो बारीक (छोटे) जीव जैसे कि जूएँ, खटमल, मच्छर, आदि जीवों की हिंसा कभी भी न करें।

(२) किसी भी प्रकार की मुश्किल में या परेशानी में या कुछ अयोग्य आचरण हो जाय तो इससे परेशान होकर या पश्चात्ताप के रूप में भी किसी प्रकार का आत्मघात तो न ही करें और शस्त्रादि से स्वयं का या दूसरों के किसी भी अंग का छेदन भी न करें।

(३) धर्म-कार्य के लिये भी कोई किसी प्रकार का चोरी का कर्म न करें और मालिकी की चीजें जैसे कि काष्ठ, पुष्प, फल आदि मालिक की आज्ञा के बिना न लें।

(४) स्वयं के स्वार्थ के लिये किसी पर भी मिथ्या आरोप न लगायें और किसी को गाली तो कभी

भी न दें ।

(५) किसी की निंदा, द्रोह या अवगुण (दोष), अभाव (कमी) की बातें कभी भी न करें और न सुनें ।

(६) हमेशा सत्य वचन ही बोलें । फिर भी यदि कोई सत्य वचन बोलने से स्वयं का या दूसरों का द्रोह होता हो तो ऐसा सत्य वचन भी कभी न बोलें ।

(७) जो कृतघ्नी हो अर्थात् किया हुआ भूल जाय, उसके संग का त्याग करें ।

(८) चोर, पापी, व्यसनी, पाखंडी, कामी तथा लोगों को ठगनेवाला – ऐसे छः प्रकार के कुसंग का संग न करें ।

(९) जो मनुष्य भक्ति का या ज्ञान का सहारा लेकर स्त्री, द्रव्य और रसास्वाद के प्रति अति लालची होकर पापी प्रवृत्ति का आचरण करते हो ऐसे

मनुष्य का संग न करें ।

(१०) मंदिर, जीर्ण देवालय, नदी–तालाब का किनारा, रास्ता, बोया हुआ खेत, वृक्ष की छाया तथा बाग–बगीचा आदि स्थानों में कभी भी मल–मूत्र न करें तथा थूंके भी नहीं ।

(११) चोरी–छिपे कहीं भी आना–जाना नहीं चाहिए और निकलना भी नहीं चाहिए ।

(१२) पुरुष, स्त्री के मुख से ज्ञान–वार्ता न सुनें और स्त्रीओं के साथ वाद–विवाद न करें ।

(१३) गुरु का, अतिश्रेष्ठ मनुष्य का, समाज में प्रतिष्ठित मनुष्य का, किसी विद्वान का तथा शस्त्रधारी मनुष्य का कभी भी अपमान न करें और संतो–भक्तों आदि किसी का भी अपमान कभी भी नहीं करना ।

(१४) बिना सोचे–समझे व्यवहारिक कार्य तत्काल न करें, लेकिन धर्म–संबंधी कार्य हो तो तत्काल करें ।

(१५) प्रतिदिन साधु का समागम करें ।

(१६) भगवान या संत के दर्शनार्थ खाली हाथ न जायें ।

(१७) किसी के साथ विश्वासघात न करें ।

(१८) स्वयं अपने ही मुख से अपनी बडाई न करें ।

(१९) मंदिर में आने के बाद स्त्री पुरुष का और पुरुष स्त्री का स्पर्श न करें ।

(२०) कंठ में (गले में) तुलसी की या काष्ठ की माला (कंठी) नित्य धारण करें ।

(२१) नित्य प्रति सूर्योदय से पहले जागे और **स्वामिनारायण** नाम का स्मरण करें ।

(२२) इसके बाद शौचविधि कर बाँया हाथ दस बार और दोनों हाथ मिलाकर सात बार, ऐसे कुल सत्रह बार शुद्ध मिट्टी या पावडर से हाथ धोयें । साबुन या लिक्विड का उपयोग न करें ।

(२३) इसके बाद एक ही स्थान पर बैठकर दंतधावन (मंजन) करें । बाद में शुद्ध-पवित्र जल से

स्नान करें ।

(२४) इसके बाद (पुरुष वर्ग धोया हुआ शुद्ध एक वस्त्र पहनें और एक ओढे) प्रतिदिन **स्वामिनारायण** भगवान की व्यक्तिगत पूजा अवश्य करें । पूजा किये बिना पानी भी न पीयें और भोजन भी न करें ।

(२५) पुरुष वर्ग भाल (ललाट), दोनों हस्त तथा छाती के मध्य में चंदन का तिलक करें तथा चंदन का चांदला (टीका) हस्त तथा छाती में तिलक के मध्य में करें तथा कुमकुम का चांदला (टीका) भाल के मध्य में तिलक करें और स्त्रियाँ सिर्फ भाल में ही कुमकुम की बिंदी करें । विधवा स्त्रियाँ तिलक भी न करें और बिंदी भी न करें ।

(२६) इसके बाद भगवान की प्रगटभाव से मानसी पूजा करें । बाद में '**स्वामिनारायण**' महामंत्र का जाप करें (माला करें) और प्रतिदिन "**अहम्**

अनादिमुक्त स्वामिनारायण दासोस्मि'' इस गुरुमंत्र की एक माला करें ।

(२७) पत्र, कंद, फल या कोई भी चीज भगवान को अर्पण किये बिना न खायें और कोई भी चीज या पदार्थ प्रसादी का किये बिना उसका उपयोग न करें ।

(२८) प्रतिदिन **स्वामिनारायण** भगवान के मंदिर जायें और भगवान के कीर्तन, धून्य बोलें तथा संतों का समागम करें ।

(२९) व्यक्ति के गुण के हिसाब से उनको कार्य के लिये प्रेरित करें तथा उस हिसाब से उसका सम्मान करें तथा कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति आयें या बडे-बुजुर्ग आयें तो उनकी योग्यता अनुसार उनका सन्मान करें तथा योग्य स्थान दें ।

(३०) सभा में पैर के ऊपर पैर रखकर या खडे पाँव

न बैठे ।

(३१) किसी भी प्रकार के लालच में आकर अपने धर्म का त्याग न करें ।

(३२) किसी की गुप्त बातें जानते हो तो भी कभी प्रकाशित न करें ।

(३३) चातुर्मास में संत–समागम, माला, परिक्रमा, सद्ग्रंथों का पठन, व्रत–उपवास या ब्रह्मचर्यादिक विशेष नियम धारण करें तथा उसका पालन करें ।

(३४) साल में तीन बडी एकादशी होती है । (१) अषाढ सुद (२) भादो सुद (३) कार्तिक सुद एकादशी । ये तीनों एकादशी, निर्जला एकादशी करना जरुरी है । निम्न व्रत के दिन प्रेमपूर्वक उपवास करें और उपवास के दिन विशेष प्रयत्न करके भी दिन की निद्रा का त्याग करें ।

● चैत्र सुद नोम के दिन भगवान स्वामिनारायण का प्रागट्य हुआ है । उस दिन हरिनवमी का उपवास करना होगा ।

(३५) कभी भूत-प्रेतादिक का उपद्रव हो तो "**स्वामिनारायण**" महामंत्र का जाप करें या उच्च स्वर से उस महामंत्र की धून्य करें।

(३६) सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहण के समय सब क्रियाओं का त्याग करके **स्वामिनारायण** भगवान का भजन करें तथा ग्रहण के मोक्ष के बाद वस्त्र सहित स्नान करके गृहस्थ सत्संगी अपने सामर्थ्य अनुसार दान करें और त्यागी को **स्वामिनारायण** भगवान की पूजा करना चाहिये।

(३७) सत्संगी मात्र जन्म के तथा मरण के सूतक का अपने संबंध के अनुसार यथाशास्त्र पालन करें।

(३८) कभी जाने या अनजाने में छोटा-बडा पाप हो जाय तो बडे पुरुष (सत्पुरुष) से या संतों को पूछकर उस पाप का प्रायश्चित्त करें।

(३९) अपने नजदीकी संबंध बिना, जो विधवा स्त्रियाँ हैं, उनका स्पर्श न करें।

(४०) अपने माता-पिता तथा आश्रित मनुष्य की तथा

बीमार-दुःखी की सेवा जीवन-पर्यंत करें ।

(४१) अपने सामर्थ्य अनुसार, अपनी जरूरत के अनुसार अन्न-द्रव्य का संग्रह करें तथा घर में पशु हो तो उनके लिये भी चारे का संग्रह करें ।

(४२) व्यवहारिक लेन-देन में अपने पुत्र या मित्रादिक के साथ भी, साक्ष्य सहित, लिखित में व्यवहार करें, बिना लिखा-पढी का कोई भी व्यवहार न करें ।

(४३) अपनी आय से ज्यादा खर्च न करें और आय खर्च का लेखा-जोखा अवश्य रखें ।

(४४) अपने नौकर-चाकर या मजदूर, उनको तय किया हुआ ही वेतन (मजदूरी) दें, लेकिन उससे कम न दें ।

(४५) आप जहाँ रहते हो, वहाँ कोई आपत्काल आ जाये या विषम देशकाल आ जाये और वो अपना मूलवतन हो तो भी उसका त्याग करें और जहाँ अच्छा देशकाल हो, अच्छी

परिस्थितियाँ हो वहाँ सुख से रहें ।

(४६) व्यवहार से सुखी या धनाढ्य हरिभक्तों को चाहिए कि वो **स्वामिनारायण** भगवान का बडा समैया, उत्सव करायें और मंदिर बनवायें तथा साधु और हरिभक्तों को भोजन करायें ।

(४७) सत्संगी ऐसी सुहागन स्त्रियों को चाहिये कि अपना पति अंध हो, रोगी हो, दरिद्र हो तो भी उनकी सम्मानपूर्वक, प्रेम से सेवा करें पर कटु वचन कभी न बोलें ।

(४८) विधवा स्त्रियाँ पति–बुद्धि की भावना से भगवान को भजें और अपने पिता–पुत्रादिक संबंधी की आज्ञा में रहें, लेकिन स्वतंत्रता पूर्वक न रहें ।

त्यागी संतों के पंचवर्तमान

(धर्मामृत, निष्काम शुद्धि, शिक्षापत्री तथा गढडा प्रथम के ७८ वे वचनामृत की टीका के आधार पर)

त्यागी को गृहस्थ के वर्तमान (नियमों) का पालन तो करना ही है, लेकिन तदुपरांत...

(१) निष्कामी वर्तमान :

त्यागी संतों को अष्ट प्रकार से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। जैसे कि....

- स्त्री का संग न करें।
- स्त्री के वस्त्रों को स्पर्श न करें।
- स्त्री को स्पर्श न करें।
- स्त्री के रूप-कुरूप की बात न करें। स्त्री काली है, गोरी है, युवान है या वृद्ध है, उसका निर्णय न करें।
- स्त्री का मनन न करें।

- स्त्री के चित्र को भी निहार के न देखें और स्पर्श भी न करें ।
- स्त्री को भोगने का संकल्प भी न करें तो क्रिया का तो प्रश्न ही नहीं उठता ।
- स्त्रियों के साथ बात न करें ।

इसलिये,

संतों को चाहिये कि वे जोड (दो संत) बिना अकेले बाहर न जायें या विचरण न करें क्योंकि, इससे एक-दूसरे की मर्यादा के कारण भी निष्कामीभाव दृढ रहे और अगर अनजाने में कुछ भूल हो जायें तो निष्कामशुद्धि (शास्त्र का नाम) के अनुसार उसका प्रायश्चित्त करें ।

(२) निर्लोभी वर्तमान :

- साधु होकर कोडी जितना भी द्रव्य अपने पास रखें, रखवायें या छुए तो उनको एक एक मिनट

हजार गायों को मारने का पाप लगता है।

- कहे अनुसार ग्यारह वस्त्रों से ज्यादा बारहवाँ वस्त्र न रखें।
- वस्त्र भी मोटे मादरपाट के ही पहनें, पर बारीक (पतला) वस्त्र न पहनें।
- वस्त्रों को रंग से न रंगे, पर रामपुर गाँव की भगवी मिट्टी से ही रंगे।
- सिले हुए वस्त्र न पहनें।
- रजोगुणी रेशमी, मलमल या अन्य वस्त्र, तथा रजोगुणी पदार्थों को स्वयं के उपयोग के लिये न रखें।

(३) निर्मानी वर्तमान :

किसी भी प्रकार का मान न रखें।

स्वामिनारायण भगवान की इच्छा से मान-सम्मान मिले या अपमान मिले तो भी दोनों परिस्थिति में समभाव में रहकर बर्ताव करें।

(४) निःस्नेही वर्तमान :

- अपने पूर्वाश्रम के माता-पिता, भाई या निकट के संबंधी के साथ किसी प्रकार का व्यवहार न रखें ।
- अपनी जन्मभूमि या पूर्वाश्रम के घर से कोई व्यवहार न रखें ।
- स्नेह एक मात्र **स्वामिनारायण** भगवान में तथा भगवान को साथ में रखकर संतों तथा हरिभक्तों में ही करें ।

(५) निःस्वादी वर्तमान :

- खाने और पीने के लिये किसी धातु के बर्तन का उपयोग न करें, पर काष्ठ के पात्र का तथा तुंबडी का (पानी पीने का पात्र) ही उपयोग करें ।
- **स्वामिनारायण** भगवान की इच्छा से जो भी भोजन (अन्न) मिले, उसमें पानी डालकर और सब मिलाकर के निःस्वादी भोजन करें ।

इसके अतिरिक्त शिक्षापत्री की अन्य आज्ञाओं का

भी त्यागी संतों को अवश्य पालन करना चाहिये ।

१) जिस स्थान में स्त्रियों का आना-जाना हो उस स्थान में स्नानादिक क्रिया करने भी न जायें ।

२) मैथुनासक्त पशु-पक्षी आदि प्राणी मात्र उसको जान करके न देखें ।

३) स्त्री की वेश-भूषा को धारण किये हुए पुरुष को न छुए और उसके सामने न देखें तथा उसके साथ बात भी न करें ।

४) स्त्री के उद्देशय से **स्वामिनारायण** भगवान की कथा-वार्ता और कीर्तन न करें ।

५) अपने ब्रह्मचर्य व्रत का अथवा पंचवर्तमान का खंडन हो, ऐसा वचन अगर अपने गुरु का हो तो भी न मानें ।

६) अगर कोई स्त्री जबरदस्ती अपने अति समीप आये तो उसे बोलकर या तिरस्कार करके भी

तुरन्त भगाये, लेकिन समीप न आने दें ।

७) स्वयं के शरीर पर तेलमर्दन न करें और करवाये भी नहीं ।

८) रसना (जिबान)के इन्द्रिय को तो विशेषकर जीतें ।

९) काम, क्रोध, लोभ और मान आदिक अंतःशत्रु को जीतें ।

१०) अपने रहने का (ठहरने का) जो स्थान है वहाँ कभी भी स्त्री का प्रवेश न होने दें ।

११) **स्वामिनारायण** भगवान की भक्ति के बिना व्यर्थ समय पसार न करें ।

१२) ग्राम्यवार्ता (व्यर्थ चर्चा) न करें तथा जान करके सुने भी नहीं ।

१३) आपत्काल के बिना कभी भी पलंग (खटिया) पर न सोयें ।

१४) बडे संत के सामने निरंतर (हमेशा) निष्कपटभाव

से बर्ताव करें ।

१५) कोई कुमतिवाला दुष्टजन हो और वो, अपने को गाली दे या मारे तो सहन करें, लेकिन उसको सामने गाली न दें और मारे भी नहीं । पर उसका हित हो ऐसा मन में चिंतवन करें, लेकिन उसका अहित हो ऐसा तो संकल्प भी न करें ।

१६) सबके सामने नम्र रहें और सबका सहन करें । निर्मानीभाव अडिग रखें ।

१७) किसी प्रकार की अहम्बुद्धि न रखें और अपने संबंधी में ममत्व का भाव न रखें ।

इस प्रकार, इस शिक्षापत्री के साररूप आपकी सर्व आज्ञा में, हे **स्वामिनारायण** भगवान, हम दृढभाव से आचरण कर सकें, ऐसा दिव्य बल दो... बल दो.... बल दो.... ।

शिक्षापत्री

वामे यस्य स्थिता राधाश्रीश्च यस्यास्ति वक्षसि ।
वृन्दावनविहारं तं श्रीकृष्णं हृदि चिन्तये ॥१॥
लिखामि सहजानन्दस्वामी सर्वान्निजाश्रितान् ।
नानादेशस्थितान् शिक्षापत्रीं वृत्तालयस्थितः ॥२॥
भ्रात्रो रामप्रतापेच्छारामयोर्धर्मजन्मनोः ।
यावयोध्याप्रसादाख्यरघुवीरामिधौ सुतौ ॥३॥
मुकुन्दानन्दमुख्याश्च नैष्ठिका ब्रह्मचारिणः ।
गृहस्थाश्च मयारामभट्टाद्या ये मदाश्रयाः ॥४॥
सधवा विधवा योषा याश्च मच्छिष्यतां गताः ।
मुक्तानन्दादयो ये स्युः साधवश्चाखिला अपि ॥५॥
स्वधर्मरक्षिका मे तैः सर्वैर्वाच्याः सदाशिषः ।
श्रीमन्नारायणस्मृत्या सहिताः शास्त्रसम्मताः ॥६॥
एकाग्रेणैव मनसा पत्रीलेखः सहेतुकः ।
अवधार्योऽयमखिलैः सर्वजीवहितावहः ॥७॥
ये पालयन्ति मनुजाः सच्छास्त्रप्रतिपादितान् ।
सदाचारान् सदा तेऽत्र परत्र च महासुखाः ॥८॥

तानुल्लंघ्यात्र वर्तन्ते ये तु स्वैरं कुबुद्धयः ।
त इहामुत्र च महल्लभन्ते कष्टमेव हि ॥९॥
अतो भवद्भिर्मच्छिष्यैः सावधानतयाऽखिलैः ।
प्रीत्यैतामनुसृत्यैव वर्तितव्यं निरन्तरम् ॥१०॥
कस्यापि प्राणिनो हिंसा नैव कार्याऽत्र मामकैः ।
सूक्ष्मयूकामत्कुणादेरपि बुद्ध्या कदाचन ॥११॥
देवतापितृयागार्थमप्यजादेश्च हिंसनम् ।
न कर्तव्यमहिंसैव धर्मः प्रोक्तोऽस्ति यन्महान् ॥१२॥
स्त्रिया धनस्य वा प्राप्त्यै साम्राज्यस्य च वा क्वचित् ।
मनुष्यस्य तु कस्यापि हिंसा कार्या न सर्वथा ॥१३॥
आत्मघातस्तु तीर्थेऽपि न कर्तव्यश्च न क्रुधा ।
अयोग्याचरणात् क्वापि न विषोद्बंधनादिना ॥१४॥
न भक्ष्यं सर्वथा मांसं यज्ञशिष्टमपि क्वचित् ।
न पेयं च सुरामद्यमपि देवनिवेदितम् ॥१५॥
अकार्याचरणे क्वापि जाते स्वस्य परस्य वा ।
अंगच्छेदो न कर्तव्यः शस्त्राद्यैश्च क्रुधापि वा ॥१६॥
स्तेनकर्म न कर्तव्यं धर्मार्थमपि केनचित् ।
सस्वामिकाष्ठपुष्पादि न ग्राह्यं तदनाज्ञया ॥१७॥

व्यभिचारो न कर्तव्यः पुम्भिः स्त्रीभिश्च मां श्रितैः ।
द्यूतादि व्यसनं त्याज्यं नाद्यं भङ्गादिमादकम् ॥१८॥
अग्राह्यान्नेन पक्वं यदन्नं तदुदकं च न ।
जगन्नाथपुरोऽन्यत्र ग्राह्यं कृष्णप्रसाद्यपि ॥१९॥
मिथ्यापवादः कस्मिंश्चिदपि स्वार्थस्य सिद्धये ।
नारोप्यो नापशब्दाश्च भाषणीयाः कदाचन ॥२०॥
देवतातीर्थविप्राणां साध्वीनां च सतामपि ।
वेदानां च न कर्तव्या निन्दा श्रव्यान च क्वचित् ॥२१॥
देवतायै भवेद्यस्यै सुरामांसनिवेदनम् ।
यत्पुरोऽजादिहिंसा च न भक्ष्यं तन्निवेदितम् ॥२२॥
दृष्ट्वा शिवालयादीनि देवागाराणि वर्त्मनि ।
प्रणम्य तानि तद्देवदर्शनं कार्यमादरात् ॥२३॥
स्ववर्णाश्रमधर्मो यः स हातव्यो न केनचित् ।
परधर्मो न चाचर्यो न च पाखण्डकल्पितः ॥२४॥
कृष्णभक्तेः स्वधर्माद्वा पतनं यस्य वाक्यतः ।
स्यात्तन्मुखान्न वै श्रव्याः कथावार्ताश्च वा प्रभो ॥२५॥
स्वपरद्रोहजननं सत्यं भाष्यं न कर्हिचित् ।
कृतघ्नसंगस्त्यक्तव्यो लुञ्चा ग्राह्या न कस्यचित् ॥२६॥

चोरपापिव्यसनिनां संगः पाखण्डिनां तथा ।
कामिनां च न कर्तव्यो जनवञ्चनकर्मणाम् ॥२७॥
भक्तिं वा ज्ञानमालम्ब्य स्त्रीद्रव्यरसलोलुभाः ।
पापे प्रवर्तमानाः स्युः कार्यस्तेषां न संगमः ॥२८॥
कृष्णकृष्णावताराणां खण्डनं यत्र युक्तिभिः ।
कृतं स्यात्तानिशास्त्राणि न मान्यानि कदाचन ॥२९॥
अगालितं न पातव्यं पानीयं च पयस्तथा ।
स्नानादि नैव कर्तव्यं सूक्ष्मजन्तुमयाम्भसा ॥३०॥
यदौषधं च सुरया सम्पृक्तं पललेन वा ।
अज्ञातवृत्तवैद्येन दत्तं चाद्यं न तत् क्वचित् ॥३१॥
स्थानेषु लोकशास्त्राभ्यां निषिद्धेषु कदाचन ।
मलमूत्रोत्सर्जनं च न कार्यं ष्ठीवनं तथा ॥३२॥
अद्वारेण न निर्गम्यं प्रवेष्टव्यं न तेन च ।
स्थाने सस्वामिके वासः कार्योऽपृष्ट्वा न तत्पतिम् ॥३३॥
ज्ञानवार्ताश्रुतिर्नार्या मुखात् कार्या न पुरुषैः ।
न विवादः स्त्रिया कार्यो न राज्ञा न च तज्जनैः ॥३४॥
अपमानो न कर्तव्यो गुरुणां च वरीयसाम् ।
लोके प्रतिष्ठितानां च विदुषां शस्त्रधारिणाम् ॥३५॥

कार्यं न सहसा किंचित्कार्यो धर्मस्तु सत्वरम् ।
पाठनीयाऽधीतविद्या कार्यः संगोऽन्वहं सताम् ॥३६॥
गुरुदेवनृपेक्षार्थं न गम्यं रिक्तपाणिभिः ।
विश्वासघातो नो कार्यः स्वश्लाघा स्वमुखेन च ॥३७॥
यस्मिन् परिहितेऽपि स्युर्दृश्यान्यंगानि चात्मनः ।
तद्दूष्यं वसनं नैव परिधार्यं मदाश्रितैः ॥३८॥
धर्मेण रहिता कृष्णभक्तिः कार्या न सर्वथा ।
अज्ञनिन्दाभयान्नैव त्याज्यं श्रीकृष्णसेवनम् ॥३९॥
उत्सवाहेषु नित्यं च कृष्णमन्दिरमागतैः ।
पुम्भिः स्पृश्या न वनितास्तत्र ताभिश्च पुरुषाः ॥४०॥
कृष्णदीक्षां गुरोः प्राप्तै स्तुलसीमालिके गले ।
धार्ये नित्यं चोर्ध्वपुण्ड्रं ललाटादौ द्विजातिभिः ॥४१॥
तत्तु गोपीचन्दनेन चन्दनेनाथवा हरेः ।
कार्यं पूजावाशिष्टेन केसरादियुतेन च ॥४२॥
तन्मध्य एव कर्तव्यः पुण्ड्रद्रव्येण चन्द्रकः ।
कुङ्कुमेनाथवा वृत्तोः राधालक्ष्मी प्रसादिना ॥४३॥
सच्छूद्राः कृष्णभक्ता ये तैस्तु मालोर्ध्वपुण्ड्रके ।
द्विजातिवद्धारणीये निजधर्मेषु संस्थितैः ॥४४॥

भक्तैस्तदितरैर्माले चन्दनादिन्धनोद्भवे ।
धार्ये कण्ठे ललाटेऽथ कार्यः केवलचन्द्रकः ॥४५॥
त्रिपुण्ड्ररुद्राक्षधृतिर्येषां स्यात्स्वकुलागता ।
तैस्तु विप्रादिभिः क्वापि न त्याज्या सा मदाश्रितैः ॥४६॥
एकात्म्यमेव विज्ञेयं नारायणमहेशयोः ।
उभयोर्ब्रह्मरूपेण वेदेषु प्रतिपादनात् ॥४७॥
शास्त्रोक्त आपद्धर्मो यः स त्वल्पापदि कर्हिचित् ।
मदाश्रितैर्मूख्यतया ग्रहीतव्यो न मानवैः ॥४८॥
प्रत्यहं तु प्रबोद्धव्यं पूर्वमेवोदयाद्रवेः ।
विधाय कृष्णस्मरणं कार्यः शौचविधिस्ततः ॥४९॥
उपविश्यैव चैकत्र कर्तव्यं दन्तधावनम् ।
स्नात्वा शुच्यम्बुना धौते परिधार्यै च वाससी ॥५०॥
उपविश्य ततः शुद्ध आसने शुचिभूतले ।
असंकीर्ण उपस्पृश्यं प्राङ्मुखं वोत्तरामुखम् ॥५१॥
कर्तव्यमूर्ध्वपुण्ड्रं च पुम्भिरेव सचन्द्रकम् ।
कार्य सधवनारीभिर्भाले कुंकुमचन्द्रकः ॥५२॥
पुण्ड्रं वा चन्द्रको भाले न कार्यो मृतनाथया ।
मनसा पूजनं कार्यं ततः कृष्णस्य चाखिलैः ॥५३॥

प्रणम्य राधाकृष्णस्य लेख्यार्चां तत आदरात् ।
शक्त्या जपित्वा तन्मन्त्रं कर्तव्यं व्यावहारिकम् ॥५४॥
ये त्वम्बरीषवद्भक्ताः स्युरिहात्मनिवेदिनः ।
तैश्च मानसपूजान्तं कार्यमुक्तक्रमेण वै ॥५५॥
शैली वा धातुजा मूर्तिः शालग्रामोऽर्च्य एव तैः ।
द्रव्यैर्यथाप्तैः कृष्णस्य जप्योऽथाष्टाक्षरो मनुः ॥५६॥
स्तोत्रादेरथ कृष्णस्य पाठः कार्यः स्वशक्तितः ।
तथानधीतगीर्वाणैः कार्यं तन्नामकीर्तनम् ॥५७॥
हरेर्विधाय नैवेद्यं भोज्यं प्रासादिकं ततः ।
कृष्णसेवापरैः प्रीत्या भवितव्यं च तैः सदा ॥५८॥
प्रोक्तास्ते निर्गुणा भक्ता निर्गुणस्य हरेर्यतः ।
सम्बन्धात्तत्क्रियाः सर्वा भवन्त्येव हि निर्गुणाः ॥५९॥
भक्तैरेतैस्तु कृष्णायानर्पितं वार्यपि क्वचित् ।
न पेयं नैव भक्ष्यं च पत्रकन्दफलाद्यपि ॥६०॥
सर्वैरशक्तौ वार्धक्याद्गरीयस्यापदाऽथवा ।
भक्ताय कृष्णमन्यस्मै दत्त्वा वृत्यं यथाबलम् ॥६१॥
आचार्येणैव दत्तं यद्यच्च तेन प्रतिष्ठितम् ।
कृष्णस्वरूपं तत्सेव्यं वन्द्यमेवेतरत्तु यत् ॥६२॥

भगवन्मन्दिरं सर्वैः सायं गन्तव्यमन्वहम् ।
नामसंकीर्तनं कार्यं तत्रोच्चै राधिकापतेः ॥६३॥
कार्यास्तस्य कथावार्ताः श्रव्याश्च परमादरात् ।
वादित्रसहितं कार्यं कृष्णकीर्तनमुत्सवे ॥६४॥
प्रत्यहं कार्यमित्थं हि सर्वैरपि मदाश्रितैः ।
संस्कृतप्राकृतग्रन्थाभ्यासश्चापि यथामति ॥६५॥
यादृशैर्यो गुणैर्युक्तस्तादृशे स तु कर्मणि ।
योजनीयो विचार्यैव नान्यथा तु कदाचन ॥६६॥
अन्नवस्त्रादिभिः सर्वे स्वकीयाः परिचारकाः ।
सम्भावनीयाः सततं यथायोग्यं यथाधनम् ॥६७॥
यादृग्गुणो यः पुरुषस्तादृशा वचनेन सः ।
देशकालानुसारेण भाषणीयो न चान्यथा ॥६८॥
गुरुभूपालवर्षिष्ठत्यागिविद्वत्तपस्विनाम् ।
अभ्युत्थानादिना कार्यः सन्मानो विनयान्वितैः ॥६९॥
नोरौ कृत्वा पादमेकं गुरुदेवनृपान्तिके ।
उपवेश्यं सभायां च जानू बद्धवा न वाससा ॥७०॥
विवादो नैव कर्तव्यः स्वाचार्येण सह क्वचित् ।
पूज्योऽन्नधनवस्त्राद्यैर्यथाशक्ति स चाखिलैः ॥७१॥

तमायान्त निशम्याशु प्रत्युद्गन्तव्यमादरात् ।
तस्मिन् यात्यनुगम्यं च ग्रामान्तावधि मच्छ्रितैः ॥७२॥
अपि भूरिफलं कर्म धर्मापेतं भवेद्यदि ।
आचर्य तर्हि तन्नैव धर्मः सर्वार्थदोऽस्ति हि ॥७३॥
पूर्वैर्महद्भिरपि यदधर्माचरणं क्वचित् ।
कृतं स्यांत्तत्तु न ग्राह्यं ग्राह्यो धर्मस्तु तत्कृतः ॥७४॥
गुह्यवार्ता तु कस्यापि प्रकाश्या नैव कुत्रचित् ।
समदृष्ट्या न कार्यश्च यथार्हार्चाव्यतिक्रमः ॥७५॥
विशेषनियमो धार्यश्चातुर्मास्येऽखिलैरपि ।
एकस्मिन् श्रावणेमासि स त्वशक्तैस्तु मानवैः ॥७६॥
विष्णोः कथायाः श्रवणं वाचनं गुणकीर्तनम् ।
महापूजा मंत्रजपः स्तोत्रपाठः प्रदक्षिणाः ॥७७॥
साष्टांगप्रणतिश्चेति नियमा उत्तमा मताः ।
एतेष्वेकतमो भक्त्या धारणीयो विशेषतः ॥७८॥
एकादशीनां सर्वासां कर्तव्यं व्रतमादरात् ।
कृष्णजन्मदिनानां च शिवरात्रेश्च सोत्सवम् ॥७९॥
उपवासदिने त्याज्या दिवा निद्रा प्रयत्नतः ।
उपवासस्तया नश्येन्मैथुनेनेव यन्नृणाम् ॥८०॥

सर्ववैष्णवराजश्रीवल्लभाचार्यनन्दनः ।
श्री विठ्ठलेशः कृतवान् यं व्रतोत्सवनिर्णयम् ॥८१॥
कार्यास्तमनुसृत्यैव सर्व एव व्रतोत्सवाः ।
सेवारीतिश्च कृष्णस्य ग्राह्या तदुदितैव हि ॥८२॥
कर्तव्या द्वारिकामुख्यतीर्थयात्रा यथाविधि ।
सर्वैरपि यथाशक्ति भाव्यं दीनेषु वत्सलैः ॥८३॥
विष्णुः शिवो गणपतिः पार्वती च दिवाकरः ।
एताः पूज्यतया मान्या देवताः पंच मामकैः ॥८४॥
भूताद्युपद्रवे क्वापि वर्म नारायणात्मकम् ।
जप्यं च हनुमन्मन्त्रो जप्यो न क्षुद्रदैवतः ॥८५॥
रवेरिन्द्रोश्चोपरागे जायमानेऽपराः क्रियाः ।
हित्वाशु शुचिभिः सर्वैः कार्यः कृष्णमनोर्जपः ॥८६॥
जातायामथ तन्मुक्तौ कृत्वा स्नानं सचेलकम् ।
देयं दानं गृहिजनैः शक्तयाऽन्यैस्त्वर्च्य ईश्वरः ॥८७॥
जन्माशौचं मृताशौचं स्वसम्बन्धानुसारतः ।
पालनीयं यथाशास्त्रं चातुर्वर्ण्यं जनैर्मम ॥८८॥
भाव्यं शमदमक्षान्तिसंतोषादिगुणान्वितैः ।
ब्राह्मणैः शौर्यधैर्यादिगुणोपेतैश्च बाहुजैः ॥८९॥

वैश्यैश्च कृषिवाणिज्यकुसीदमुखवृत्तिभिः ।
भवितव्यं तथा शूद्रैर्द्विजसेवादिवृत्तिभिः ॥९०॥
संस्काराश्चाह्निकं श्राद्धं यथाकालं यथाधनम् ।
स्वस्वगृह्यानुसारेण कर्तव्यं च द्विजन्मभिः ॥९१॥
अज्ञानाज्ज्ञानतो वाऽपि गुरु वा लघु पातकम् ।
क्वापि स्यात्तर्हि तत्प्रायश्चित्तं कार्यं स्वशक्तितः ॥९२॥
वेदाश्च व्याससूत्राणि श्रीमद्भागवताभिधम् ।
पुराणं भारते तु श्रीविष्णोर्नामसहस्रकम् ॥९३॥
तथा श्रीभगवद्गीता नीतिश्च विदुरोदिता ।
श्रीवासुदेवमाहात्म्यं स्कान्दवैष्णवखण्डगम् ॥९४॥
धर्मशास्त्रान्तर्गता च याज्ञवल्कयऋषेः स्मृतिः ।
एतान्यष्ट ममेष्टानि सच्छास्त्राणि भवन्ति हि ॥९५॥
स्वहितेच्छुभिरेतानि मच्छिष्यैः सकलैरपि ।
श्रोतव्यान्यथ पाठ्यानि कथनीयानि च द्विजैः ॥९६॥
तत्राचारव्यवहृतिनिष्कृतानां च निर्णये ।
ग्राह्या मिताक्षरोपेता याज्ञवल्क्यस्य तु स्मृतिः ॥९७॥
श्रीमद्भागवतस्यैषु स्कन्धौ दशमपञ्चमौ ।
सर्वाधिकतया ज्ञेयौ कृष्णमाहात्म्यबुद्धये ॥९८॥

दशमः पञ्चमः स्कन्धौ याज्ञवल्क्यस्य च स्मृतिः ।
भक्तिशास्त्रं योगशास्त्रं धर्मशास्त्रं क्रमेण मे ॥९९॥
शारीरकाणां भगवद्गीतायाश्चावगम्यताम् ।
रामानुजाचार्यकृतं भाष्यमाध्यात्मिकं मम ॥१००॥
एतेषु यानि वाक्यानि श्रीकृष्णस्य वृषस्य च ।
अत्युत्कर्षपराणिस्युस्तथा भक्तिविरागयोः ॥१०१॥
मन्तव्यानि प्रधानानि तान्येवेतरवाक्यतः ।
धर्मेण सहिता कृष्णभक्तिः कार्येति तद्गहः ॥१०२॥
धर्मो ज्ञेयः सदाचारः श्रुतिस्मृत्युपपादितः ।
माहात्म्यज्ञानयुग्भूरिस्नेहो भक्तिश्च माधवे ॥१०३॥
वैराग्यं ज्ञेयमप्रीतिः श्रीकृष्णेतरवस्तुषु ।
ज्ञानं च जीवमायेशरूपाणां सुष्ठु वेदनम् ॥१०४॥
हृत्स्थोऽणुसूक्ष्मश्चिद्रूपो ज्ञात्वा व्याप्याखिलां तनुम् ।
ज्ञानशक्त्या स्थितो जीवो ज्ञेयोऽच्छेद्यादिलक्षणः ॥१०५॥
त्रिगुणात्मा तमः कृष्णशक्तिर्देहतदीययोः ।
जीवस्य चाहंममताहेतुर्मायावगम्यताम् ॥१०६॥
हृदये जीववज्जीवे योऽन्तर्यामितया स्थितः ।
ज्ञेयः स्वतन्त्र ईशोऽसौ सर्वकर्मफलप्रदः ॥१०७॥

स श्रीकृष्णः परंब्रह्म भगवान् पुरुषोत्तमः ।
उपास्य इष्टदेवो नः सर्वाविर्भावकारणम् ॥१०८॥
स राधया युतो ज्ञेयो राधाकृष्ण इति प्रभुः ।
रुक्मिण्या रमयोपेतो लक्ष्मीनारायणः सहि ॥१०९॥
ज्ञेयोऽर्जुनेन युक्तोऽसौ नरनारायणाभिधः ।
बलभद्रादियोगेन तत्तन्नामोच्यते स च ॥११०॥
एते राधादयो भक्तास्तस्य स्युः पार्श्वतः क्वचित् ।
क्वचित्तदंगेऽतिस्नेहात्सतु ज्ञेयस्तदैकलः ॥१११॥
अतश्चास्य स्वरूपेषु भेदो ज्ञेयो न सर्वथा ।
चतुरादिभुजत्वं तु द्विबाहोस्तस्य चैच्छिकम् ॥११२॥
तस्यैव सर्वथा भक्तिः कर्तव्या मनुजैर्भुवि ।
निःश्रेयस्करं किञ्चित्ततोन्यन्नेति दृश्यताम् ॥११३॥
गुणिनां गुणवत्ताया ज्ञेयं ह्येतत् परं फलम् ।
कृष्णे भक्तिश्च सत्संगोऽन्यथा यान्ति विदोऽप्यधः ॥११४॥
कृष्णस्तदवताराश्च ध्येयास्तत्प्रतिमाऽपि च ।
न तु जीवानृदेवाद्या भक्ता ब्रह्मविदोऽपि च ॥११५॥
निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् ।
विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥११६॥

श्रव्यः श्रीमद्भागवतदशमस्कन्ध आदरात् ।
प्रत्यहं वा सकृद्वर्षे वर्षे वाच्योऽथ पण्डितैः ॥११७॥
कारणीया पुरश्चर्या पुण्यस्थानेऽस्य शक्तितः ।
विष्णुनामसहस्रादेश्चापि कार्येप्सितप्रदा ॥११८॥
दैव्यामापदि कष्टायां मानुष्यां वा गदादिषु ।
यथा स्वपररक्षा स्यात्तथा वृत्त्यं न चान्यथा ॥११९॥
देशकालवयोवित्तजातिशक्त्यनुसारतः ।
आचारो व्यवहारश्च निष्कृतं चावधार्यताम् ॥१२०॥
मतं विशिष्टाद्वैतं मे गोलोको धाम चेप्सितम् ।
तत्र ब्रह्मात्मना कृष्णसेवा मुक्तिश्च गम्यताम् ॥१२१॥
एते साधारणा धर्माः पुंसां स्त्रीणां च सर्वतः ।
मदाश्रितानां कथिता विशेषानथ कीर्तये ॥१२२॥
मज्ज्येष्ठावरजभ्रातृसुताभ्यां तु कदाचन ।
स्वासन्नसम्बन्धहीना नोपदेश्या हि योषितः ॥१२३॥
न स्पृष्टव्याश्च ताः क्वापि भाषणीयाश्च ता न हि ।
क्रौर्यं कार्यं न कस्मिंश्चिन्न्यासो रक्ष्यो न कस्यचित् ॥१२४॥
प्रतिभूत्वं न कस्यापि कार्यं च व्यावहारिके ।
भिक्षयापदतिक्रम्या न तु कार्यमृणं क्वचित् ॥१२५॥

स्वशिष्यार्पितधान्यस्य कर्तव्यो विक्रयो न च ।
जीर्णं दत्वा नवीनं तु ग्राह्यं तन्नैष विक्रयः ॥१२६॥
भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां च कार्यं विघ्नेशपूजनम् ।
इषकृष्णचतुर्दश्यां कार्याऽर्चा च हनूमतः ॥१२७॥
मदाश्रितानां सर्वेषां धर्मरक्षणहेतवे ।
गुरुत्वे स्थापिताभ्यां च ताभ्यां दीक्ष्या मुमुक्षवः ॥१२८॥
यथाधिकारं संस्थाप्याः स्वे स्वे धर्मे निजाश्रिताः ।
मान्याः सन्तश्चकर्तव्यः सच्छास्त्राभ्यास आदरात् ॥१२९॥
मया प्रतिष्ठापितानां मन्दिरेषु महत्सु च ।
लक्ष्मीनारायणादीनां सेवा कार्या यथाविधि ॥१३०॥
भगवन्मन्दिरं प्राप्तो योऽन्नार्थी कोऽपि मानवः ।
आदरात्सतु सम्भाव्यो दानेनान्नस्य शक्तितः ॥१३१॥
संस्थाप्य विप्रं विद्वांसं पाठशालां विधाप्य च ।
प्रवर्तनीया सद्विद्या भुवि यत् सुकृतं महत् ॥१३२॥
अथैतयोस्तु भार्याभ्यामाज्ञया पत्युरात्मनः ।
कृष्णमन्त्रोपदेशश्च कर्तव्यः स्त्रीभ्य एव हि ॥१३३॥
स्वासन्नसम्बन्धहीना नरास्ताभ्यां तु कर्हिचित् ।
न स्प्रष्टव्या न भाषाश्च तेभ्यो दर्श्यं मुखं न च ॥१३४॥

गृहाख्याश्रमिणो ये स्युः पुरुषा मदुपाश्रिताः ।
स्वासन्नसम्बन्धहीना न स्पृश्या विधवाश्च तैः ॥ १३५ ॥
मात्रा स्वस्त्रा दुहित्रा वा विजने तु वयःस्थया ।
अनापदि न तैः स्थेयं कार्यं दानं न योषितः ॥१३६॥
प्रसंगो व्यवहारेण यस्याः केनापि भूपतेः ।
भवेत्तस्याः स्त्रियाः कार्यः प्रसंगो नैव सर्वथा ॥१३७॥
अन्नाद्यैः शक्तितोऽभ्यर्च्यो ह्यतिथिस्तैर्गृहागतः ।
दैवं पैत्र्यं यथाशक्ति कर्तव्यं च यथोचितम् ॥१३८॥
यावज्जीवं च शुश्रूषा कार्या मातुः पितुर्गुरोः ।
रोगार्तस्य मनुष्यस्य यथाशक्ति च मामकैः ॥१३९॥
यथाशक्त्युद्यमः कार्यो निजवर्णाश्रमोचितः ।
मुष्कच्छेदो न कर्तव्यो वृषस्य कृषिवृत्तिभिः ॥१४०॥
यथाशक्ति यथाकालं संग्रहोऽन्नधनस्य तैः ।
यावद्व्ययं च कर्तव्यः पशुमद्भिस्तृणस्य च ॥१४१॥
गवादीनां पशूनां च तृणतोयादिभिर्यदि ।
सम्भावनं भवेत्स्वेन रक्ष्यास्ते तर्हि नान्यथा ॥१४२॥
ससाक्ष्यमन्तरा लेखं पुत्रमित्रादिनाऽपि च ।
भूवित्तदाना दानाभ्यां व्यवहार्यं न कर्हिचित् ॥१४३॥

कार्ये वैवाहिके स्वस्यान्यस्य वार्ष्यधनस्य तु ।
भाषाबन्धो न कर्तव्यः ससाक्ष्यं लेखमन्तरा ॥१४४॥
आयद्रव्यानुसारेण व्ययः कार्यो हि सर्वदा ।
अन्यथा तु महद्दुःखं भवेदित्यवधार्यताम् ॥१४५॥
द्रव्यस्याऽऽयो भवेद्यावान् व्ययो वा व्यावहारिके ।
तौ संस्मृत्य स्वयं लेख्यौ स्वक्षरैः प्रतिवासरम् ॥१४६॥
निजवृत्त्युद्यमप्राप्तधनधान्यादितश्च तैः ।
अर्प्यो दशांशः कृष्णाय विंशोंऽशस्त्विह दुर्बलैः ॥१४७॥
एकादशीमुखानां च व्रतानां निजशक्तितः ।
उद्यापनं यथाशास्त्रं कर्तव्यं चिन्तितार्थदम् ॥१४८॥
कर्तव्यं कारणीयं वा श्रावणे मासि सर्वथा ।
बिल्वपत्रादिभिः प्रीत्या श्रीमहादेवपूजनम् ॥१४९॥
स्वाचार्यान्न ऋणं ग्राह्यं श्रीकृष्णस्य च मन्दिरात् ।
ताभ्यां स्वव्यवहारार्थं पात्रभूषांशुकादि च ॥१५०॥
श्रीकृष्णगुरुसाधूनां दर्शनार्थं गतौ पथि ।
तत्स्थानेषु च न ग्राह्यं परान्नं निजपुण्यहृत् ॥१५१॥
प्रतिज्ञातं धनं देयं यत्स्यात्तत् कर्मकारिणे ।
न गोप्यमृणशुद्ध्यादि व्यवहार्यं न दुर्जनैः ॥ १५२ ॥

दुष्कालस्य रिपूणां वा नृपस्योपद्रवेण वा ।
लज्जाधनप्राणनाशः प्रातः स्याद्यत्र सर्वथा ॥१५३॥
मूलदेशोऽपि स स्वेषां सद्य एवं विचक्षणैः ।
त्याज्यो मदाश्रितैः स्थेयं गत्वा देशान्तरं सुखम् ॥१५४॥
आढ्यैस्तु गृहिभिः कार्या अहिंसा वैष्णवा मखाः ।
तीर्थेषु पर्वसु तथा भोज्या विप्राश्च साधवः ॥१५५॥
महोत्सवा भगवतः कर्तव्या मन्दिरेषु तैः ।
देयानि पात्रविप्रेभ्यो दानानि विविधानि च ॥१५६॥
मदाश्रितैर्नृपैर्धर्मशास्त्रमाश्रित्य चाखिलाः ।
प्रजाः स्वाः पुत्रवत्पाल्या धर्मः स्थाप्यो धरातले ॥१५७॥
राज्यांगोपायषड्वर्गा ज्ञेयास्तीर्थानि चाञ्जसा ।
व्यवहारविदः सभ्या दण्ड्यादण्ड्याश्च लक्षणैः ॥१५८॥
सभर्तृ काभिर्नारिभिः सेव्यः स्वपतिरीशवत् ।
अन्धो रोगी दरिद्रो वा षण्ढो वाच्यं न दुर्वचः ॥१५९॥
रूपयौवनयुक्तस्य गुणिनोऽन्य नरस्य तु ।
प्रसंगो नैव कर्तव्यस्ताभिः साहजिकोऽपि च ॥१६०॥
नरेक्ष्यनाभ्यूरुकुचाऽनुत्तरीया च नो भवेत् ।
साध्वी स्त्री न च भण्डेक्षा न निर्लज्जादिसंगिनी ॥१६१॥

भूषासदंशुकधृतिः परगेहोपवेशनम् ।
त्याज्यं हास्यादि च स्त्रीभिः पत्यौ देशान्तरं गते ॥१६२॥
विधवाभिस्तु योषाभिः सेव्यः पतिधिया हरिः ।
आज्ञायां पितृपुत्रादेर्वृत्यं स्वातन्त्र्यतो नतु ॥१६३॥
स्वासन्नसम्बन्धहीना नराः स्पृश्या न कर्हिचित् ।
तरुणैस्तैश्च तारुण्ये भाष्यं नावश्यकं विना ॥१६४॥
स्तनंधयस्य नुः स्पर्शे न दोषोऽस्ति पशोरिव ।
आवश्यके च वृद्धस्य स्पर्शे तेन च भाषणे ॥१६५॥
विद्याऽनासन्नसम्बन्धात्ताभिः पाठ्या न काऽपि नुः ।
व्रतोपवासैः कर्तव्यो मुहुर्देहदमस्तथा ॥१६६॥
धनं च धर्मकार्येऽपि स्वनिर्वाहोपयोगि यत् ।
देयं ताभिर्न तत् क्वापि देयं चेदधिकं तदा ॥१३७॥
कार्यश्च सकृदाहारस्ताभिः स्वापस्तु भूतले ।
मैथुनासक्तयोर्वीक्षा क्वापि कार्या न देहिनोः ॥१६८॥
वेषो न धार्यस्ताभिश्च सुवासिन्याः स्त्रियास्तथा ।
न्यासिन्या वीतरागाया विकृतश्च न कर्हिचित् ॥१६९॥
संगो न गर्भपातिन्याः स्पर्शः कार्यश्च योषितः ।
शृंगारवार्ता न नृणां कार्याः श्रव्या न वै क्वचित् ॥१७०॥

निजसम्बन्धिभिरपि तारुण्ये तरुणैर्नरैः ।
साकं रहसि न स्थेयं ताभिरापदमन्तरा ॥१७१॥
न होलाखेलनं कार्यं न भूषादेश्च धारणम् ।
न धातुसूत्रयुक्सूक्ष्मवस्त्रादेरपि कर्हिचित् ॥१७२॥
सधवाविधवाभिश्च न स्नातव्यं निरम्बरम् ।
स्वरजोदर्शनं स्त्रीभिर्गोपनीयं न सर्वथा ॥१७३॥
मनुष्यं चांशूकादीनि नारी क्वापि रजस्वला ।
दिनत्रयं स्पृशेन्नैव स्नात्वा तुर्येऽह्नि सा स्पृशेत् ॥१७४॥
नैष्ठिकव्रतवन्तो ये वर्णिनो मदुपाश्रयाः ।
तैः स्पृश्या न स्त्रियो भाष्या न न वीक्ष्याश्च ता धिया ॥१७५॥
तासां वार्ता न कर्तव्या न श्रव्याश्च कदाचन ।
तत्पादचारस्थानेषु न च स्नानादिकाः क्रियाः ॥१७६॥
देवताप्रतिमां हित्वा लेख्या काष्ठादिजापि वा ।
न योषित्प्रतिमा स्पृश्या न वीक्ष्याबुद्धिपूर्वकम् ॥१७७॥
न स्त्रीप्रतिकृतिः कार्या न स्पृश्यं योषितोंऽशुकम् ।
न वीक्ष्यं मैथुनपरं प्राणिमात्रं च तैर्धिया ॥१७८॥
न स्पृश्यो नेक्षणीयश्च नारीवेषधरः पुमान् ।
न कार्यं स्त्रीः समुद्दिश्य भगवद्गुणकीर्तनम् ॥१७९॥

ब्रह्मचर्य व्रतत्यागपरं वाक्यं गुरोरपि ।
तैर्न मान्यं सदा स्थेयं धीरै स्तुष्टैरमानिभिः ॥१८०॥
स्वातिनैकट्यमायान्ती प्रसभं वनिता तु या ।
निवारणीया साभाष्य तिरस्कृत्यापि वा द्रुतम् ॥१८१॥
प्राणापद्युपपन्नायां स्त्रीणां स्वेषां च वा क्वचित् ।
तदा स्पृष्ट्वाऽपि तद्रक्षा कार्या सम्भाष्य ताश्च वा ॥१८२॥
तैलाभ्यंगो न कर्तव्यो न धार्यं चायुधं तथा ।
वेषो न विकृतो धार्यो जेतव्या रसना च तैः ॥१८३॥
परिवेषणकर्त्री स्याद्यत्र स्त्री विप्रवेश्मनि ।
न गम्यं तत्र भिक्षार्थं गन्तव्यमितिरत्र तु ॥१८४॥
अभ्यासो वेदशास्त्राणां कार्यश्च गुरुसेवनम् ।
वर्ज्यः स्त्रीणामिव स्त्रैणपुंसां संगश्च तैः सदा ॥१८५॥
चर्मवारि न वै पेयं जात्या विप्रेण केनचित् ।
पलाण्डुलशुनाद्यं च तेन भक्ष्यं न सर्वथा ॥१८६॥
स्नानं सन्ध्यां च गायत्रीजपं श्रीविष्णुपूजनम् ।
अकृत्वा वैश्वदेवं च कर्तव्यं नैव भोजनम् ॥१८७॥
साधवो येऽथ तैःसर्वैर्नैष्ठिकब्रह्मचारिवत् ।
स्त्रीस्त्रैणसंगादि वर्ज्यं जेतव्याश्चान्तरारयः ॥१८८॥

सर्वेन्द्रियाणि जेयानि रसना तु विशेषतः ।
न द्रव्यसङ्ग्रहः कार्यः कारणीयो न केनचित् ॥१८९॥
न्यासो रक्ष्यो न कस्यापि धैर्यं त्याज्यं न कर्हिचित् ।
न प्रवेशयितव्या च स्वावासे स्त्री कदाचन ॥१९०॥
न च संघं विना रात्रौ चलितव्यमनापदि ।
एकाकिभिर्न गन्तव्यं तथा क्वापि विनापदम् ॥१९१॥
अनर्घ्यं चित्रितं वासः कुसुम्भाद्यैश्च रञ्जितम् ।
न धार्यं च महावस्त्रं प्राप्तमन्येच्छया पिऽतत् ॥१९२॥
भिक्षां सभां विना नैव गन्तव्यं गृहिणो गृहम् ।
व्यर्थः कालो न नेतव्यो भक्तिं भगवतो विना ॥१९३॥
पुमानेव भवेद्यत्र पक्वान्नपरिवेषणः ।
ईक्षणादि भवेन्नैव यत्र स्त्रीणां च सर्वथा ॥१९४॥
तत्र गृहिगृहे भोक्तुं गन्तव्यं साधुभिर्मम ।
अन्यथामान्नमर्थित्वा पाकः कार्यः स्वयं च तैः ॥१९५॥
आर्षभो भरतः पूर्वं जडविप्रो यथा भुवि ।
अवर्ततात्र परमहंसैर्वृत्यं तथैव तैः ॥१९६॥
वर्णिभिः साधुभिश्चैतैर्वर्जनीयं प्रयत्नतः ।
ताम्बूलस्याहिफेनस्य तमालादेश्च भक्षणम् ॥१९७॥

संस्कारेषु न भोक्तव्यं गर्भाधानमुखेषु तैः ।
प्रेतश्राद्धेषु सर्वेषु श्राद्धे च द्वादशाहिके ॥१९८॥
दिवास्वापो न कर्तव्यो रोगाद्यापदमन्तरा ।
ग्राम्यवार्ता न कार्या च न श्रव्या बुद्धिपूर्वकम् ॥१९९॥
स्वप्यं न तैश्च खट्वायां विना रोगादिमापदम् ।
निश्छद्म वर्तितव्यं च साधूनामग्रतः सदा ॥२००॥
गालिदानं ताडनं च कृतं कुमतिभिर्जनैः ।
क्षन्तव्यमेव सर्वेषां चिन्तनीयं हितं च तैः ॥२०१॥
दूतकर्म न कर्तव्यं पैशुनं चारकर्म च ।
देहेऽहन्ता च ममता न कार्या स्वजनादिषु ॥२०२॥
इति संक्षेपतो धर्माः सर्वेषां लिखिता मया ।
साम्प्रदायिकाग्रन्थेभ्यो ज्ञेय एषां तु विस्तरः ॥२०३॥
सच्छास्त्राणां समुद्धृत्य सर्वेषां सारमात्मना ।
पत्रीयं लिखिता नृणामभीष्टफलदायिनी ॥२०४॥
इमामेव ततो नित्यमनुसृत्य ममाश्रितैः ।
यतात्मभिर्वर्तितव्यं न तु स्वैरं कदाचन ॥२०५॥
वर्तिष्यन्ते य इत्थं हि पुरुषा योषितस्तथा ।
ते धर्मादि चतुर्वर्गसिद्धिं प्राप्स्यन्ति निश्चितम् ॥२०६॥

नेत्थं य आचारिष्यन्ति ते त्वस्मत्सम्प्रदायतः ।
बहिर्भूता इति ज्ञेयं स्त्रीपुंसैः साम्प्रदायिकैः ॥२०७॥
शिक्षापत्र्याः प्रतिदिनं पाठोऽस्या मदुपाश्रितैः ।
कर्तव्योऽनक्षरज्ञैस्तु श्रवणं कार्यमादरात् ॥२०८॥
वक्त्रभावे तु पूजैव कार्योऽस्याः प्रतिवासरम् ।
मद्रुपमिति मद्वाणी मान्येयं परमादरात् ॥२०९॥
युक्ताय सम्पदा दैव्या दातव्येयं तु पत्रिका ।
आसुर्या सम्पदाढ्याय पुंसे देया न कर्हिचित् ॥२१०॥
विक्रमार्कशकस्याब्दे नेत्राष्टवसुभूमिते ।
वसन्ताद्यदिने शिक्षापत्रीयं लिखिता शुभा ॥२११॥
निजाश्रितानां सकलार्तिहन्ता सधर्मभक्तेरवनं विधाता ।
दाता सुखानां मनसेप्सितानां तनोतु कृष्णोऽखिलमंगलं नः ॥२१२॥

॥ इति श्रीसहजानन्दस्वामिलिखिता

शिक्षापत्री समाप्तम् ॥

दैनिक प्रार्थना

"हे दयालु, आप हमेशा प्रसन्न रहे ऐसा दिव्यजीवन जीना है, दया करो, दया करो, दया करो...."

सर्वावतारी स्वामिनारायण भगवान सदा प्रसन्न रहे कब ? तो हम उनकी पसंद का दिव्यजीवन जीयें तब...

उनकी (महाराज की) पसंद के दिव्य जीवन का मतलब क्या ? ये हम नहीं जानते ।

फिर भी, उनकी पसंद का दिव्यजीवन हम अपने बलबूते तो जी नहीं सकेंगे ! वो तो उनके बल (सामर्थ्य) से ही जी सकेंगे... अतः हम सबके सुकानी (खैवनहार), दिव्यजीवन की राह पर चलानेवाले, प्रिय (व्हाला) पू.स्वामीश्री ने हमको भगवान की पसंद का दिव्य जीवन जीने के लिये जरूरी ध्येय, प्रार्थना के रूप में दिये हैं ।

तो प्रतिदिन पूजन के समय ही ये सातों दिन की प्रार्थना, दिन (वार) के अनुसार सच्चे मन से, महाप्रभु के समक्ष करें और सारे दिन दौरान मनन-चिंतन द्वारा तद्अनुसार आचरण करने का अनुसंधान रखें ।

प्रार्थना क्या है ?

- प्रार्थना यानी प्रभु के समक्ष अपनी गलतियों का इकरार और फिर से गलतियाँ नहीं करने का करार है।
- प्रार्थना यानी हृदय की गहराई से निकलता आर्तनाद।
- जैसे बर्फ पिघलने से पानी हो जाता है, वैसे अहम् पिघलने से प्रार्थना बनती है।
- गद्‌गदभाव से की गई प्रार्थना आंतरिक समृद्धि की वृद्धि का एकमात्र साधन (उपाय) है।
- प्रार्थना यानी प्रभु को प्रसन्न करने की भूख और गरज (लगन) का प्रतीक।
- प्रार्थना यानी निर्दोष और निष्कपट होकर, हल्के (कोमल) फूल जैसे बनने का एक मात्र इलाज।
- प्रार्थना यानी प्रभु के मार्ग में सतत प्रगति करने का प्रेरक बल।
- प्रार्थना यानी वर्णमाला की शब्दजाल नहीं, लेकिन प्रभु के घर की आध्यात्मिक परिभाषा है।
- प्रार्थना यानी आंतरिक दोषों को मिटाने का तीखा एसिड।

सोमवार की प्रार्थना

भगवान और सत्पुरुष की महिमा

हे दयालु, हे स्वामिनारायण भगवान.... ! आप और आपकी कृपा से हमको मिले सत्पुरुष, ये इस लोक के हो ही नहीं । दिव्य ही हो ।

कहाँ आप और कहाँ मैं.....?

बस, ऐसे दिव्यभाव और महिमा की जीवसत्ता से (आत्मा से) हाँ करा दो.. नाथ... हाँ करा दो । कभी भी हमारी बुद्धि या मन आपको नापने का प्रयत्न करे ही नहीं... ऐसी दया करो...

पूरे दिन दौरान अखंड मनन-चिंतन और दृढता के लिये इतना सोचें...

- भगवान और सत्पुरुष भले ही दिखते हो मेरे जैसे, लेकिन वे मेरे जैसे है ही नहीं.... वे तो माया से पर का दिव्य स्वरूप है ।
- वे जिस समय, जो करते है, वे योग्य है । उनकी किसी भी क्रिया में संकल्प करनेवाला मैं कौन....?
- बस, कहाँ वे और कहाँ मैं ?

मंगलवार की प्रार्थना

प्रगटभाव और अंतर्यामीपन का भाव

हे करुणा के सागर...! आप और आपके सत्पुरुष हमेशा प्रगट और प्रत्यक्ष ही हो । मेरा पल-पल का सब-कुछ जानते हो और देखते हो । ऐसा प्रगटपन का भाव और अंतर्यामीपन का भाव मुझे अखंड रहे.. कभी भी भूल न जाउँ... ऐसी द्रढता करायें ।

– मनन-चिंतन और दृढता के लिये इतना सोचें.....

- अवरभाव में (मायिक दृष्टि से) भगवान और सत्पुरुष भले ही मेरे साथ न हो... लेकिन वे तो हमेशा सर्वत्र प्रगट ही है ।
- मेरी प्रत्येक क्रिया को वे देख रहे है.. मेरे प्रत्येक संकल्प को वे जानते है ।
- भूल से भी, वे नाराज हो जायें या उनको दुःख पहुँचे ऐसी कोई क्रिया या विचार मुझसे न हो जायें... ।

बुधवार की प्रार्थना

निर्मानीपन (निर्मानी होना)

हे दयालु ! ''मान'' रखे वह आपको बिलकुल पसंद नहीं है.. तो हे नाथ.. किसी सेवा में या किसी क्रिया में मुझे साधन का, बुद्धि का या होशियारी का संकल्प ही न उठे... और सब के साथ दासभाव से (नम्रभाव से) रह सकूँ, ऐसा निर्मल जीवन दो... दयालु, ऐसा निर्मल जीवन दो ।

– मनन–चिंतन और दृढता के लिये इतना सोचें.....

- मान बहुत सूक्ष्म है इसलिये उसको पहचानने के लिये सूक्ष्म दृष्टि रखें ।
- ''ये काम मैंने किया, कितना अच्छा किया.. दूसरा कोई ऐसा कर ही नहीं सकता...'' भूल से भी ऐसा संकल्प नहीं करना चाहिये... इसी को कहते हैं मान ।
- ''मैं कुछ भी नहीं हूँ... जो कुछ हो रहा है या हम से करवा रहे है... वह महाराज ही करवा रहे है... जो भगवान के कर्तापन के भाव को भूलकर, अहंभाव का अंकुर उठेगा तो मेरा किया हुआ सब बेकार हो जायेगा ।'' ऐसा सोच कर सबके साथ दासभाव से, रंकभाव से बर्ताव करें ।

गुरुवार की प्रार्थना

सब में दिव्यभाव

हे करुणा के सागर ! आप से संबंध रखनेवाले सब में आप बिराजते है... इसलिये हे दयालु... मेरी वाणी या बर्ताव से किसी को दुःख न पहुँचे... उनके द्वारा आपको दुःख न पहुँचे... ऐसे छोटे-बडे सभी भक्तों में दिव्यभाव दृढ करायें ।

– मनन-चिंतन और दृढता के लिये इतना सोचें.....

- सबमें भगवान बिराजते है... ये कभी न भूलना ।
- शायद किसी में होशियारी ज्यादा – कम हो... लेकिन अगर हमसे उनको दुःख पहुँचता है तो... उनमें बिराजमान भगवान को दुःख होगा....
- भगवान दुःखी होंगे तो हमारे में क्या माल रहेगा ।
- इसलिये किसी का भी अपराध न हो जायें इसका डर रखकर... सबकी महिमा समझकर दिव्यभाव से बर्ताव करें ।

शुक्रवार की प्रार्थना

अभाव-अवगुण से दूर रहना

हे कृपासागर... ! किसी के भी अभाव (कमी), अवगुण (दोष) और अमहिमा की बात मैं कभी करूँ ही नहीं, न ही सोच सकूँ, न ही सुन सकूँ... किन्तु सबके गुण ही ग्रहण करता रहूँ, ऐसी मुझ सेवक पर दया करो... दया करो... दया करो...

– मनन-चिंतन और दृढता के लिये इतना सोचें....

- अभाव-अवगुण की बात, ये महापाप है ।
- अभाव-अवगुण से आसुरी बुद्धि होती है... और गुण लेने से अंतर (मन) हल्का हो जाता है ।
- सभी में से, ले सको उतना गुण ही लेना ।
- कभी किसी का अवगुण लेने में आ जाये, तो मन दुःखित हो जाना चाहिये... मन ही मन भगवान से प्रार्थना करके उन व्यक्ति के गुणों का मनन कर अवगुण का निवारण करें ।

शनिवार की प्रार्थना

सरल स्वभाव

हे दयालु ! ठहराव रखे वो आपको पसंद नहीं आता... तो आपके सत्पुरुष के साथ तथा सब संतों और भक्तों के साथ मैं ठहरावी स्वभाव (मन चाहा करने का स्वभाव) को त्याग कर बिलकुल सरलता से बर्ताव कर सकूँ, ऐसी कृपा करो... कृपा करो.... कृपा करो...

– मनन–चिंतन और दृढता के लिये इतना सोचें.....

- पंचवर्तमान का, या सिद्धांत का या, सत्पुरुष की आज्ञा का भंग हुआ न हो ऐसी बाबत में ज्यादा पक्कडवाला स्वभाव न रखें ।
- एक–दूसरे को अनुकूल और अनुरूप हो जायें । तो सामंजस्य, शांति और आनंद बना रहें...
- छोटी–छोटी बातों में जिद छोडे नहीं ऐसे ठहरावी स्वभाववाले के साथ किसी की नहीं बनती.. तो भगवान को तो बने ही कैसे ?

रविवार की प्रार्थना

क्रोध का त्याग

हे महाराज ! दयालु ! आपको क्रोधी भक्त तो बिलकुल पसंद नहीं है। तो ऐसे स्वभाव का त्याग कर सहजभाव से मैं सबके साथ प्रेमपूर्वक जीवन जी सकूँ, ऐसी मुझ पर दया करो... दया करो... दया करो...

– मनन–चिंतन और दृढता के लिये इतना सोचें.....

- महाप्रभु जिसमें प्रसन्न नहीं है वह नहीं ही चाहिये। ऐसे प्रबल संकल्प के साथ बहुत सावधानी रखें कि क्रोध करना ही नहीं है।
- क्रोध हमेशा विनाश को आमंत्रण देता है।
- सबके साथ शांति से, प्रेम से... प्रसन्नता से रहना और काम लेना सीखें।

महापूजा विधि के श्लोक

-: आह्वान मंत्र :-

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ हे नाथ ! स्वामिनारायण प्रभो
धर्मसुनो दयासिंधो, श्वेषां श्रेयः परम् कुरु ।
आगच्छ भगवन् देव, स्वस्थानात् परमेश्वर
अहम् पूजा करिष्यामि, सदा त्वम् सन्मुखोभव ॥

मंगलाचरण श्लोको (शार्दूलविक्रीडित छंद)

सत्तेजोक्षरधाम दिव्य वसतिं, श्री स्वामिनारायणं,
अनादि स्वकलीनकं सुखकरं प्रत्यक्ष वैदेहिनं ।
प्रत्यक्षं मनुविग्रहं निजजने, भ्योमूर्ति सत्शर्मदं,
रोमैश्वर्य मुदा क्षराद्यसुखदं, ध्याये सदा स्वामिनं ॥ १ ॥
दिव्यं श्री घनश्याम कं शरण दं, कैशोर मूर्तिः परम्,
तेजः पुंज मुखारविंद सहजं, धर्मस्य भक्तेर्प्रियम् ।
दिव्याभूषण वस्त्र भूषित प्रभुं, सत्संगी पूज्यं सदा,
कुंकुं केसर भाल चंद्र तिलकं, ह्यर्च्ये सदा स्वामिनं ॥ २ ॥
वाणी मंगलरूपिणी च हसितं, यस्यास्ति वै मंगलं,

नेत्रै मंगलदेस्च दोर्विलसितं, नृणां परं मंगलमं ।
वक्त्रं मंगलकृच्छ पादचलितं, यस्याखिलं मंगलं,
सोयं मंगलमूर्तिराशु जगतौ, नित्यं क्रियान्मंगलं ॥ ३ ॥
कल्याणा करमुत्तराष्ट शतकं, यत्प्रार्थना स्तोत्रकं,
धर्मर्थादि फलं त्रिताप शमनं सर्वोन्नते शांति दं ।
प्रेताद्याभिचराख्य भीति शमनं, तत्संसृतेर्नाशकं,
भक्तनामभयं करं सुखकरं, वन्दे सदा स्वामिनं ॥ ४ ॥
वर्णीवेश रमणीयदर्शनं, मंदहास-रुचिराननाम्बुजम्,
पूजितं सुरनरोत्तमैर्मुदा धर्मनंदनमहं विचिन्तये ॥

बापा आप सदाय दिव्यरूप से, साथ ही हो सर्वदा,
बापा बालक आपके हम सब, उनको भूलना नहीं कभी,
बापा आप इस समय, आकर बिराजे यहाँ,
बापा बिरद आपका उर धरी, रखा है सदा मूर्ति में ही....१
बापा आप मनुष्य स्वरूप में, जैसे सुख देते थे,
बापा दिव्य नवीन सुख वैसे, आज हम सब मांगते,
बापा आनंद आज उर छलके, सो सब डोलते,
बापा और घनश्याम की जय हो, मुख से सब बोलते....२

स्वामिनारायण नामावलि

१. श्री हरिकृष्णाय नमः
२. श्री सहजानंदाय नमः
३. श्री घनश्यामाय नमः
४. श्री न्यालकरणाय नमः
५. श्री महाप्रभवे नमः
६. श्री स्वामिनारायणाय नमः
७. श्री भक्तिनंदनाय नमः
८. श्री नीलकंठ वर्णये नमः
९. श्री श्रीजीमहाराजाय नमः
१०. श्री पूर्णार्थाय नमः
११. श्री वृषनंदनाय नमः
१२. श्री हरये नमः
१३. श्री स्वामिने नमः
१४. श्री सर्वोपरीस्वरूपाय नमः
१५. श्री सदगुरुवे नमः
१६. श्री सर्वावतारीणे नमः
१७. श्री सदासाकाराकृतये नमः
१८. श्री सदानंद घन स्वरूपाय नमः
१९. श्री शुद्धाय नमः
२०. श्री सर्व कारण कारणाय नमः
२१. श्री महाराजाधिराजाय नमः
२२. श्री जन्माजन्मने नमः
२३. श्री नियामकाय नमः
२४. श्री सकलज्ञाय नमः
२५. श्री सदा प्राकट्य स्वरूपाय नमः
२६. श्री शान्ताकृतये नमः
२७. श्री स्वतंत्राय नमः
२८. श्री महातेजाक्षरधामाधिपतये नमः
२९. श्री स्वमूर्ति प्रदात्रे नमः
३०. श्री स्वसर्वोत्तमधामदाय नमः
३१. श्री दिव्यातिदिव्याय नमः
३२. श्री निर्दोषाय नमः
३३. श्री व्यतिरेक स्वरूपाय नमः
३४. श्री संकल्प स्वरूपाय नमः
३५. श्री अतिपूताय नमः
३६. श्री मूर्तिस्वरूपात्मक सुखदाय नमः
३७. श्री नित्यमुक्त स्थितिकराय नमः
३८. श्री अनादि स्वलीनस्थाय नमः

३९. श्री परमएकांतिक सन्मुखाय नमः
४०. श्री सर्वातिमुक्ताधिपतये नमः
४१. श्री तेजौंशी अन्वय स्वरूपाय नमः
४२. श्री सकलाक्षराद्य रोमैश्वर्य दात्रे नमः
४३. श्री सत्यप्रतिज्ञाय नमः
४४. श्री व्याप्तानंत सत्कीर्तये नमः
४५. श्री स्वामिनारायण नामकरणाय नमः
४६. श्री स्वनाम महत्त्वदर्शकाय नमः
४७. श्री स्वामिनारायण धर्मप्रस्तोत्रे नमः
४८. श्री प्रौढप्रतापाश्रित सुखदाय नमः
४९. श्री सद्यःसमाधि स्थितिकराय नमः
५०. श्री नित्यात्यंतिक मोक्षदाय नमः
५१. श्री परब्रह्मविद्या प्रदाय नमः
५२. श्री प्रतिमास्वरूप सदाप्रत्यक्षाय नमः
५३. श्री दिव्यातिशांति प्रदाय नमः
५४. श्री दिव्याभूषण वस्त्रभूषिताय नमः
५५. श्री स्वसंत-भक्त महिमाकरणाय नमः
५६. श्री स्वसंग संगीसुखदाय नमः
५७. श्री अंतः शत्रु निवारकाय नमः
५८. श्री उपशम स्थितिकारकाय नमः
५९. श्री आस्तिक्य प्रदाय नमः
६०. श्री वर्तमान धर्मप्रवर्तकाय नमः
६१. श्री मायाकाल विभेदकाय नमः
६२. श्री ध्यानातिप्रियाय नमः
६३. श्री सर्वजीवहितकाय नमः
६४. श्री अबुद्धि विध्वंसकाय नमः
६५. श्री सद्बुद्धिप्रदाय नमः
६६. श्री दीर्घदर्शीने नमः
६७. श्री क्षान्तानिधये नमः
६८. श्री कलीतारकाय नमः
६९. श्री चेतोनिग्रह युक्तिविदे नमः
७०. श्री निजजनोद्धारिणे नमः
७१. श्री सदासत्पोषकाय नमः
७२. श्री दैत्यानां गुरुमोहकाय नमः
७३. श्री अहिंसा मखःपोषकाय नमः
७४. श्री परमहंस प्रीतियुक्ताय नमः
७५. श्री निर्लोभाय नमः
७६. श्री जितेन्द्रिय प्रियतराय नमः
७७. श्री तीव्र सुवैराग्याय नमः
७८. श्री सत्शास्त्रःव्यसनाय नमः

७९. श्री तपःप्रियतराय नमः
८०. श्री धैर्यान्विताय नमः
८१. श्री निर्दंभाय नमः
८२. श्री महाव्रतोन्नतिकराय नमः
८३. श्री नैष्ठिकधर्म पोषणकराय नमः
८४. श्री सद्धार्मिकत्वप्रदाय नमः
८५. श्री प्रागल्भ्याय नमः
८६. श्री अपराजिताय नमः
८७. श्री अतिकरुणाक्षाय नमः
८८. श्री अधर्म विध्वंसकाय नमः
८९. श्री याताहंकृतये नमः
९०. श्री यातनिद्राय नमः
९१. श्री निर्मत्सराय नमः
९२. श्री निःस्पृहाय नमः
९३. श्री भक्तानां कवचाय नमः
९४. श्री षडूर्मि विजयाय नमः
९५. श्री जिह्वा स्वादजितप्रियाय नमः
९६. श्री सुकोमलाय नमः
९७. श्री सुमधुर वाग्मिने नमः
९८. श्री नित्योदाराय नमः
९९. श्री सुभक्ति पोषणकाराय नमः
१००. श्री दिव्य श्रवण कीर्तनाय नमः
१०१. श्री अद्रोहाय नमः
१०२. श्री कृपानिधये नमः
१०३. श्री अजात शत्रवे नमः
१०४. श्री अति निर्मान प्रियाय नमः
१०५. श्री साधुशील हृदयाय नमः
१०६. श्री धर्मार्थादि फलप्रदाय नमः
१०७. श्री भक्तवत्सलाय नमः
१०८. श्री सर्वैवं मंगलदिव्यमूर्तये नमः
श्री अबजीबापाश्रीयै नमः
श्री गोपालानंद मुनये नमः
श्री सद्गुरवे नमः
श्री सर्व मुक्तमंडलाय नमः

श्री स्वामिनारायण भगवान का
जय जय कार हो ।

संकल्प प्रार्थना

हो प्राणप्यारे श्रीजी, इस संकल्प में बल दीजिए
लाये हो आप संकल्प से, तो संकल्प में ही समाईए
समय शक्ति बुद्धि होशियारी, आप के लिए भुगताईए
आप के लिए भुगताईए, बस दिव्यजीवन करवाईए
हो प्राणप्यारे श्रीजी ०

लडका लडकी घर के सदस्य अनादिमुक्त मनाईये ।
मेरे है यह भाव भुला के, आप के अर्थे जिवाईये,
नौकरी धंधा द्रव्यादिक सब, ट्रस्टी पद से भुगताईये
ट्रस्टीपद से भुगताईये, समय पे सहज छुडाईये ।
हो प्राणप्यारे श्रीजी ०

आप के लिये जन्म है मेरा, समज दृढ करवाईये
देह नहीं मैं मुक्त अनादि, अखंड मनन रखवाईये
रसबस कर के मूर्ति में रखे, महाराज ही ठसाईये
महाराज ही ठसाईये, बस आप अर्थे जिवाईये ।
हो प्राणप्यारे श्रीजी ०

प्रार्थना

हो रसिया मैं तो शरन तिहारी..... टेक

नहि साधन बल वचन चातुरी,
एक भरोसो चरने गिरधारी... हो० १

कडवी तुंबरिया में तो नीच भोमी की,
गुन सागर पिया तुम ही संवारी... हो० २

में अति दीन बालक तुम शरने,
नाथ न दीजो अनाथ बिसारी... हो० ३

निज जन जानी संभालोगे प्रीतम,
प्रेम सखी नित जाये बलिहारी... हो० ४

भगवान के भक्त हो उन्हें जितना सुख-दुःख आता है । वो कर्म के प्रेरित होता नही है । भगवान के भक्त को जितना दुःख होता है, वह भगवान कि आज्ञा का लोप होनेसे होता है और जितना सुख होता है, वह भगवान कि आज्ञा का पालन करने से होता है,

श्रीजीमहाराज

(ग.प्र.प्र.३४ वच.)

सत्संग साहित्य डिपार्टमेन्ट

स्वामिनारायण धाम - गांधीनगर-३८२००८.

फोन : (०७९) २३२१३०५२, ५३